DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-9,
PERSONALITY:TRAIT APPROACH
LECTURE-38

TRAIT APPROACH

शीलगुण उपागम

शीलगुण सिद्धांत व्यक्तित्व का वह सिद्धांत है जो प्रकार सिद्धांत से भिन्न एवं विषम है | शीलगुण से सामान्य अर्थ होता है व्यक्ति के व्यवहारों का वर्णन | जैसे –सतर्क ,सक्रिय ,मंडित,आदि कुछ ऐसे शब्द है जिनके सहारे मानव व्यवहार का वर्णन होता है शीलगुण कहलाने के लिए यह आवश्यक है की उसमे संगति का गुण हो | उदाहरणार्थ , यदि कोई व्यक्ति हर तरह की परिस्थिति में ईमानदारी का गुण दिखलाता है तो हम कहते है की उसके व्यवहार में संगति है तथा उसमे ईमानदारी का शीलगुण है | परन्तु जब कुछ परिस्थिति में ईमानदारी दिखलाता है तथा कुछ में नहीं ,तो यह नहीं कहा जा सकता है

की इस व्यक्ति में ईमानदारी का शीलगुण है | हाँ , यह थोड़ी देर के लिए कहा जा सकता है की उसमे ईमानदारी दिखलाने की आदत है जिससे वह कभी दिखलाता है कभी नहीं इस तरह से हम कह सकते है की व्यक्ति के व्यवहारों में पूर्ण संगति को शीलगुण तथा कम संगति को आदत कहा जा सकता है |इसी व्यवहार को शीलगुण कहलाने के लिए संगति के अलावा उसमे स्थिरता का भी गुण होना चाहिए| अतः शीलगुण एक ऐसी विशेषता होती है जिसके कारण व्यक्ति संगत ढंग से तथा सापेक्ष रूप से स्थायी ढंग से एक दुसरे से भिन्न होती है |

शीलगुण सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार व्यक्तित्व के किसी 'प्रकार' द्वारा नियंत्रित नहीं होता है बल्कि भिन्न-भिन्न प्रकार के शीलगुणो द्वारा नियंत्रित होता है जो प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद रहता है | इस तरह शीलगुण उपागम व्यक्तित्व के मौलिक इकाई को यानी शीलगुण को अलग करके उसके आधार पर व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या करता है |

इस तरह के शीलगुण उपागम में व्यक्तित्व के उन महत्वपूर्ण विमाओं की पहचान करने की कोशिश की जाती है जिसके आधार पर व्यक्ति एक दुसरे से भिन्न समझे जाते है |उस उपागम की मान्यता यह है की यदि एक बार यह जान लिया

जाता है की एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति से किस तरह से भिन्न है ,फिर यह आसानी से मापा जा सकता है की एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति से कितना भिन्न है और तब अध्ययनकर्ता उन अंतरों को विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार के अंतरों के साथ सम्बद्ध कर उसकी व्याख्या करता है |

शीलगुण सिद्धांत में मूल रूप से दो मनोवैज्ञानिकों के विचारों का उल्लेख किया जाता है जो निम्नांकित है –

(1) आलपोर्ट का योगदान –आलपोर्ट का नाम शीलगुण सिद्धांत के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है | यही कारण है को आलपोर्ट द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के सिद्धांत को 'आलपोर्ट का शीलगुण सिद्धांत' कहा जाता है आलपोर्ट ने शीलगुण को मुख्यतः दो भागो में बांटा है जो इस प्रकार है-

(I) सामान्य शीलगुण – सामान्य शीलगुण से तात्पर्य वैसे शीलगुण से होता है जो किसी समाज या संसकृति के अधिकतर लोगो की तुलना आपस में की जा सकती है |

(II) व्यक्तिगत शीलगुण –आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व शीलगुण एक दूसरा महत्वपूर्ण शीलगुण है जिसे उन्होंने व्यक्तिगत प्रवृति कहना अधिक उचित ठहराया है |उनका

विचार है कि व्यक्तिगत प्रवृति अधिक विवरणात्मक है तथा इसमें संभ्रांति भी कम होता है |व्यक्तिगत प्रवृति तथा सामान्य शीलगुण में निम्नांकित दो अंतर है –

(i) सामान्य शीलगुण समाज के अधिकतर व्यक्तियों में पाया जाता है जबकि व्यक्तिगत प्रवृति समाज के कुछ व्यक्ति विशेष में ही पाई जाती है |

(ii) सामान्य शीलगुण के आधार पर कई व्यक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है जबकि व्यक्तिगत प्रवृति के आधार पर एक ही व्यक्ति के भिन्न-भिन्न शीलगुणो का आपस में तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है | आलपोर्ट ने सामान्य शीलगुण की अपेक्षा व्यक्तिगत प्रवृति के अध्ययन पर अधिक बल डाला है | आलपोर्ट ने व्यक्तिगत प्रवृति को उस दृष्टी कोण से निम्नांकित तीन भागों में बांटा जाता है-

(i) कार्डिनल प्रवृति – इस तरह कि व्यक्तिगत प्रवृति व्यक्तित्व का इतना प्रमुख एवं प्रबल गुण होता है की उसे छिपाया नहीं जा सकता है और व्यक्तित्व के प्रत्येक व्यवहार की व्याख्या इस तरह से कार्डिनल प्रवृति के रूप में आसानी से की जा सकती है | सभी व्यक्तियों में कार्डिनल प्रवृति नहीं होती है परन्तु जिनमे होती है,वे

पूर्णरूपेण उस प्रवृति या गुण से चर्चित होते है |जैसे –महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व का कार्डिनल प्रवृति शांति एवं अहिंसा में अटूट विश्वास था और उस गुण से पुरे संसार में वे चर्चित है |अतः शांति एवं अहिंसा में विश्वास महात्मा गाँधी के कार्डिनल प्रवृति का एक उदाहरण है |

(ii) केंद्रीय प्रवृति –केन्द्रीय प्रवृति सभी व्यक्तियों में पायी जाती है | प्रत्येक व्यक्ति में 5 से 10 ऐसे प्रवृतियाँ या गुण होते है जिनके भीतर उसका व्यक्तित्व अधिक सक्रीय रहता है |

(iii) गौण प्रवृति –गौण प्रवृति वैसे गुणों को कहा जाता है कि जो व्यक्तित्व के लिए कम महत्वपूर्ण,कम संगत,कम अर्थपूर्ण तथा कम स्पष्ट होता है |जैसे –खाने की आदत,हेयर स्टाइल,पहनावा,आदि कुछ ऐसी प्रवृतियाँ है जिनके आधार पर व्यक्तित्व को समझने में कोई ख़ास मदद नहीं मिलती है और न ही उसके आधार पर व्यक्तित्व के बारे में कोई ख़ास अर्थ ही लगाया जा सकता है| आलपोर्ट ने ये भी स्पष्ट कर दिया है की एक व्यक्ति के लिए एक गुण केंद्रीय प्रवृति हो सकता है परन्तु दुसरे के लिए वही गुण गौण प्रवृति हो सकता है |

To be continued